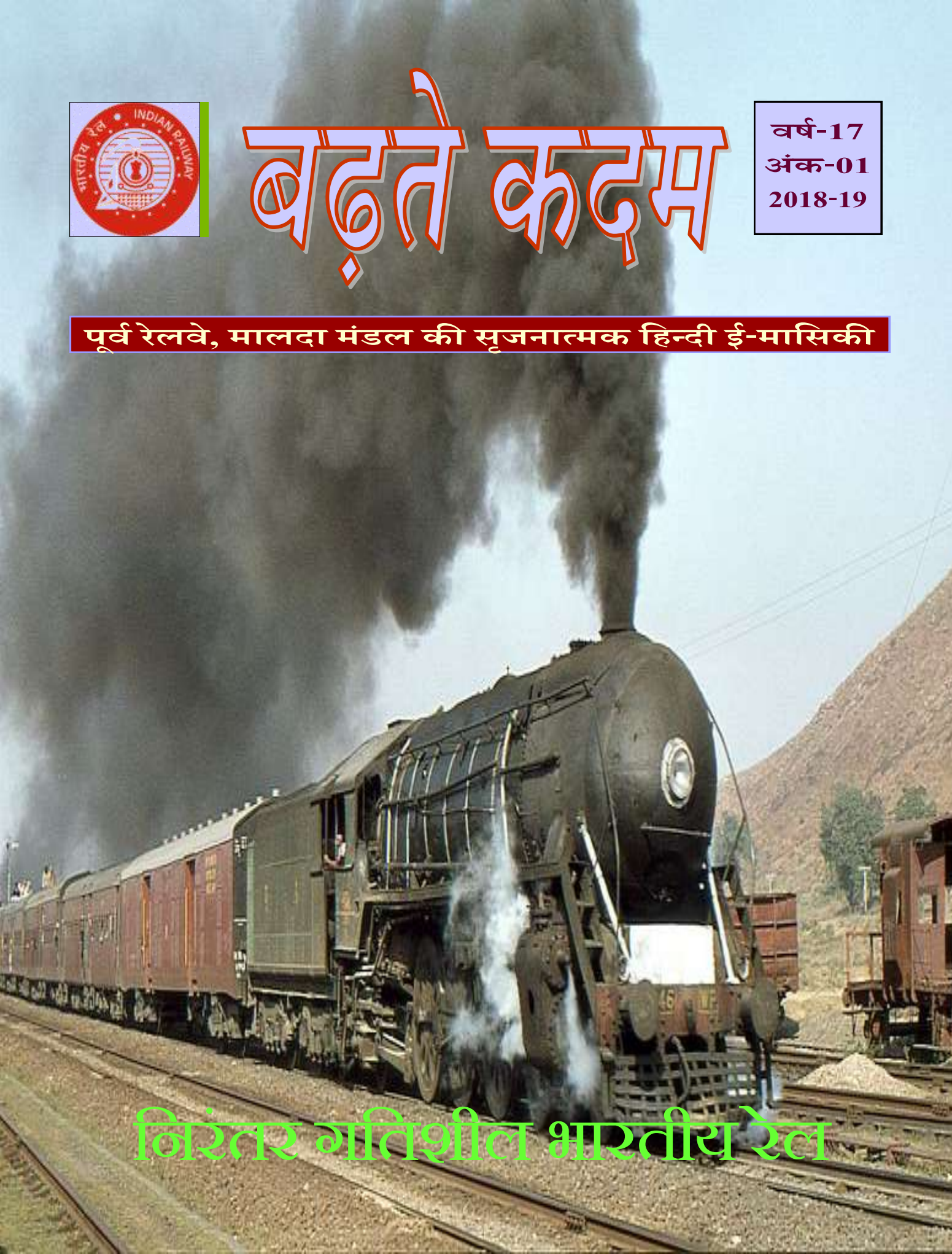

बढ़ते कदम

वर्ष-17
अंक-01
2018-19

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

निरंतर गतिशील भारतीय रेल

राजभाषा नियम, 1976

(यथा संशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः-

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ--

(क) इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है।

(ख) इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

(ग) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो:-

(क) 'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है;

(ख) 'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थातः-

(क) केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

(ख) केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

(ग) केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

(ग) 'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

(घ) 'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के
उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

(ड़) 'हिन्दी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है ;

(च) 'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

(छ) 'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, *दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली* संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

(ज) 'क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

(झ) 'हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है।

क्रमशः

विषय वस्तु

प्रसंगवश—
—सुधांशु कुमार विश्वास — 3
ज्ञान के स्वरूप —
— श्वेता दूबे 4
पृथ्वी दिवस...—
— सुशीला मोदी 5
भेंटवार्ता—-
— इन्द्रज्योति 6
आप्टिकल फाइबर
— संजीव कुमार 8
नाट्य शास्त्र... —
— सुप्रिया 10
सिर दर्द .....
— जनार्दन प्रसाद 11
भगवान सबकुछ...
— सच्चिदानंद 12
मुझे अलग कर दो
— भारत भूषण पाण्डेय 15
अन्नदाता
—- चंदन कुमार 17
वन्देमातरम
—- विजय कुमार 17
अब तुम्हें...
— प्रकाश रंजन 18
चलो चले कहीं 19
चित्र विथिका—- 20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नही है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)
Email – rajbhasha.malda@gmail.com
Whatsup **7044575977///7319444518**

फ्लोरेन्स नाइटिंगेल

फ्लोरेंस नाइटिंगल को आधुनिक नर्सिग आन्दोलन का जन्मदाता माना जाता है। दया व सेवा की प्रतिमूर्ति फ्लोरेंस नाइटिंगेल "द लेडी विद द लैंप" (दीपक वाली महिला) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका जन्म एक समृद्ध और उच्चवर्गीय ब्रिटिश परिवार में हुआ था। लेकिन उच्च कुल में जन्मी फ्लोरेंस ने सेवा का मार्ग चुना। 1854 में परिवार के तमाम विरोधों व क्रोध के पश्चात भी उन्होंने अभावग्रस्त लोगों की सेवा का व्रत लिया। दिसंबर 1844 में उन्होंने चिकित्सा सुविधाओं को सुधारने बनाने का कार्यक्रम आरंभ किया था। बाद में रोम के प्रखर राजनेता सिडनी हर्बर्ट से उनकी मित्रता हुई।नर्सिग के अतिरिक्त लेखन और अनुप्रयुक्त सांख्यिकी पर उनका पूरा ध्यान रहा।

फ्लोरेंस का सबसे महत्वपूर्ण योगदान क्रीमिया के युद्ध में रहा। अक्टूबर 1854 में उन्होंने 38 स्त्रियों का एक दल घायलों की सेवा के लिए तुर्की भेजा। इस समय किए गए उनके सेवा कार्यो के लिए ही उन्होंने लेडी विद द लैंप की उपाधि से सम्मानित किया गया। जब चिकित्सक चले जाते तब वह रात के गहन अंधेरे में मोमबत्ती जलाकर घायलों की सेवा के लिए उपस्थित हो जाती। लेकिन युद्ध में घायलों की सेवा सुश्रूषा के दौरान मिले गंभीर संक्रमण ने उन्हें जकड़ लिया था। 1859 में फ्लोरेंस ने सेंट थॉमस अस्पताल में एक नाइटिंगेल प्रक्षिक्षण विद्यालय की स्थापना की। इसी बीच उन्होंने नोट्स ऑन नर्सिग पुस्तक लिखी। जीवन का बाकी समय उन्होंने नर्सिग के कार्य को बढ़ाने व इसे आधुनिक रूप देने में बिताया। 1869 में उन्हें महारानी विक्टोरिया ने रॉयल रेड क्रॉस से सम्मानित किया। 90 वर्ष की आयु में 13 अगस्त, 1910 को उनका निधन हो गया।

उनसे पहले कभी भी बीमार घायलों के उपचार पर ध्यान नहीं दिया जाता था। किन्तु इस महिला ने तस्वीर को सदा के लिये बदल दिया। उन्होंने क्रीमिया के युद्ध के समय घायल सैनिको की बहुत सेवा की थी। वे रात-रात भर जाग कर एक लालटेन के सहारे इन घायलों की सेवा करती रही इस लिए उन्हें लेडी विथ दि लैंप का नाम मिला था उनकी प्रेरणा से ही नर्सिंग क्षेत्र में महिलाओं को आने की प्रेरणा मिली थी।

— सुधांशु कुमार विश्वास

नि:शुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
तनु चंद्रा मंडल रेल प्रबंधक	संजय कुमार भगत अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	सुधांशु कुमार विश्वास राजभाषा अधिकारी(प्र.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय कनिष्ठ अनुवादक	कैलाश चंद्र धारिया एवं जनार्दन प्रसाद

ज्ञान के स्वरूप

ज्ञान के स्वरूप के विषय में पूरी तरह स्पष्ट करना कठिन है। फिर भी जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता गया लोगों ने ज्ञान को एक से दूसरे तक पहुंचाने का कार्य किया। इसके लिए माध्यम पहले वाणी थी। उसके बाद ज्ञान को लिखने की व्यवस्था मिली और अब तो परदे पर चित्रों के माध्यम से ज्ञान को प्राप्त किया जाने लगा है।

इस संसार में ज्ञान चाहे जिस रुप में भी एक से दूसरे तक पहुंचे माध्यम उसका चाहे जो भी हो परंतु उसका कार्य सिर्फ एक ही है कि उससे कल्याण होगा। परंतु सब समय ऐसा होता नहीं है। सारा का सारा ज्ञान कल्याणकारी ही होगा ऐसा नहीं कहा जा सकता। इसीलिए हमारे मनीषियों ने ज्ञान को समझने के लिए तीन भागों में वर्गीकृत किया है।

श्रुत ज्ञान- वह ज्ञान जो सुनकर, पढ़कर, देख कर या किसी अन्य माध्यम के द्वारा प्राप्त किया जाता है उसे हम श्रुत ज्ञान कहते हैं। यह मात्र एक सूचनात्मक ज्ञान है और इस ज्ञान से मनुष्य का कल्याण पूर्ण रूप में ही संभव नहीं हो सकता है। उदाहरण के लिए हमने पुस्तक में पढ़ लिया कि इस प्रकार हम कोई जहाज बना सकते हैं तो भी हम जहाज बनाने पूरी तरह सफल हो जाएंगे यह कहा नहीं जा सकता। कुल मिलाकर यदि यह कहें इस श्रुत ज्ञान से मनुष्य इस संसार में सुखी रहने या दुखी रहने का उपादान खोज सकता है तो यह सटीक होगा लेकिन इससे जीव का पूर्ण कल्याण हो ऐसा कदापि संभव नहीं हो सकता। इसका दूसरा कारण यह है कि इससे मनुष्य की आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लेकिन इसका फायदा यह है कि इससे मनुष्य ज्ञान के दूसरे चरण में जाने को प्रस्तुत हो सकता है।

चिंतन ज्ञान- ज्ञान का यह वह स्वरूप है जो मन के द्वारा निरंतर चिंतन के उपरांत उपजता है। किसी पढ़े हुए तथ्य, किसी सुनी हुई बात पर जब हम स्वयं चिंतन करते हैं तो हमें उसकी सांसारिक वास्तविकता की जानकारी होती है। जैसे यदि हमें यह सूचना मिलती है की अगले 24 घंटे में तूफान आने वाला है तो हम उससे निपटने के लिए आवश्यक सामग्री इकट्ठा करने के लिए चिंतन करने लगते हैं या यह कहें की चिंतन करके हम आवश्यक सामग्री इकट्ठा कर लेते हैं। हमने चिंतन किया कि तूफान होने से हो सकता है कि अगले कुछ दिन बाजार बंद हो जाए और हमें जीने के लिए आवश्यक साधन ना मिले इसलिए हम बाजार से आवश्यक सामान खरीद लेते हैं लेकिन इससे भी जीव का पूर्ण कल्याण नहीं हो सकता है।

भावित ज्ञान- ज्ञान के इस स्वरूप से हम अर्थात जीव वास्तविक कल्याण कर सकता है। भावित ज्ञान से कल्याण होने के बात इसलिए कही जाती है कि यह ज्ञान आत्मा के द्वारा स्वयं स्वीकार की हुई होती है। उदाहरण के लिए यदि हमें यह पता चल जाए अर्थात दूसरे शब्दों में यह ज्ञान हो जाए कि आग में प्रकाश के साथ साथ तपन भी है तो हम आग से सदैव दूर रहना चाहेंगे। जब तक आग में हाथ जल न जाए तब तक हमें आग की तपिश का एहसास नहीं हो सकता लेकिन जिसका हाथ एक बार आग में जल गया हो उसे यह बताने की कदापि आवश्यकता नहीं होगी कि आग की तपिश कैसी होती है। यही ज्ञान भावित ज्ञान कहलाता। यह ज्ञान न सुनकर प्राप्त किया जा सकता है नहीं सोच या चिंतन कर प्राप्त किया जा सकता है। इसी ज्ञान से जीव का कल्याण संभव है। इसके बिना मनुष्य अपना कल्याण नहीं कर सकता। तभी तो सभी आत्मज्ञानियों को ऐसे भावित ज्ञान को प्राप्त करने की आवश्यकता महसूस हुई है।

ज्ञान के इस स्वरूप के द्वारा मनुष्य के स्वभाव में पूर्ण परिवर्तन हो जाता है और वह अपनी इच्छाओं का नियंत्रक बन जाता है। वह जीव सुख दुख की अनुभूतियों के परे चला जाता है और अंततः वह अपना कल्याण करने में सफल हो जाता है। मनुष्य को चाहिए कि वह निरंतर ऐसे ज्ञान को प्राप्त करने की दिशा में प्रयत्न करें।

—- श्वेता दूबे

पृथ्वी दिवस

22 अप्रैल को *विश्व पृथ्वी दिवस* के रूप में मनाया जाता है। दरअसल पृथ्वी एक बहुत व्यापक शब्द है, इसमें जल, हरियाली, वन्यप्राणी, प्रदूषण और इससे जुड़े अन्य कारक भी शामिल हैं। धरती को बचाने का आशय है, इन सभी की रक्षा के लिए पहल करना लेकिन न तो इसे लेकर कभी सामाजिक जागरूकता दिखाई गई और न ही राजनीतिक स्तर पर कभी कोई ठोस पहल की गई। शहर वासी व प्रशासन पृथ्वी संरक्षित करने को लेकर बेपरवाह ही रहते हैं।

सामाजिक रूप से भी जागरूकता फैलाने को लेकर कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई दे रही। यहां तक कि पृथ्वी दिवस को मनाने के लिए हर साल एक थीम तय किया जाता है और इसी थीम को आधार बनाकर लोगों को जागरूक किया जाता है। इस बार यानी साल 2018 की थीम है, प्लास्टिक प्रदूषण का अंत लेकिन जिस तरह बिना रोकटोक के प्लास्टिक का प्रयोग लोगों द्वारा किया जा रहा है, उससे नहीं लगता कि प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने में सफलता इतनी जल्दी मिल सकती है।

प्लास्टिक आमतौर पर लगभग 500-1000 वर्षों में खराब हो जाती है। हालांकि हम वास्तविकता में इसके ख़राब होने का समय नहीं जानते हैं। प्लास्टिक पिछले कई शताब्दियों से ज्यादा उपयोग में लायी जा रही है। इसके निर्माण के दौरान, कई खतरनाक रसायन निकलते हैं, जिससे मनुष्य और साथ ही अन्य जानवरों में भी भयानक बीमारियाँ हो सकती हैं।

भूमि की उर्वरक क्षमता को खत्म करता है प्लास्टिक

प्लास्टिक सबसे बड़ी समस्या है जिसके कारण यह भूमि की उर्वरक क्षमता को खत्म कर रही है। साथ ही भूजल को भी दूषित कर रही है। इसको जलाने पर निकलने वाला धुआं ओजोन परत को भी नुक्सान पहुंचाता है, जो कि ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है। इस समय विश्व में हर साल प्लास्टिक का उत्पादन 10 करोड़ टन के लगभग है और इसमें हर साल 4 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो रही है।

भारत में हर साल लगभग 500 मीट्रिक टन पॉलिथीन का निर्माण होता है लेकिन इसकी एक प्रतिशत से भी कम रिसाइकिलिंग हो पाती है। देश में हर साल लाखों पशु-पक्षी प्लास्टिक के कचरे से मर जाते हैं। पर्यावरण संरक्षण एक्ट की धारा 5 (सी) के तहत पॉलिथीन की जब्त सूची तैयार करने के साथ-साथ प्राथमिकी दर्ज करने का प्रावधान है लेकिन अब तक निगम प्रशासन पॉलिथीन के एक भी कारोबारी पर प्राथमिकी दर्ज नहीं कर सका है।

पॉलिथीन पर प्रतिबंध लगाने में नगर निगम नाकाम

पॉलिथीन के बढ़ते दुष्प्रभावों को देखते हुए राज्य सरकार ने पॉलिथीन पर तो प्रतिबंध लगा कर अपनी सक्रियता का परिचय दिया है, लेकिन नगर निगम समेत जिम्मेदार लोग किसी ने अभी तक इस ओर कोई ठोस कदम नहीं उठाए। इस कारण आज भी पॉलिथीन का उपयोग पूरे जोर शोर से बदस्तूर जारी है। दरअसल नगर निगम या सरकार की उदासीनता की वजह से अभी तक कोई ठोस कार्रवाई न करने के कारण दुकानदार जहां पॉलिथीन में ही ग्राहकों को सामान दे रहे हैं। वहीं आम लोग भी इसे लेकर कोई परहेज नहीं कर रहे हैं।

— सुशीला मोदी

स्थाई स्तंभ

साक्षात्कार

मालदा मंडल की हिन्दी मासिक पत्रिका ***बढ़ते कदम*** के लिए मंडल रेल प्रबंधक तनु चंद्राजी से इंद्रज्योति राय के द्वारा की गई एक भेंटवार्ता

मालदा में मंडल रेल प्रबंधक के पद पर कार्य करते हुए आपको कैसा लगता है ?

मालदा में मंडल रेल प्रबंधक के पद पर कार्य करते हुए मुझे काफी अच्छा लग रहा है।

आप अपने बचपन एवं अपनी शिक्षा दीक्षा तथा इस ऊंचाई तक कैसे पहुंचीं, इसके विषय में कुछ बताइए।

मैं भारतीय रेल लेखा सेवा 1988 बैच की अधिकारी हूं। मेरी पूरी शिक्षा दीक्षा लखनऊ में ही संपन्न हुई। मैं अपने परिवार की तीसरी पीढ़ी हूं जो भारतीय रेल में सेवारत है। सिविल सर्विस की परीक्षा के लिए मैंने कड़ी मेहनत की और मुझे केंद्रीय लोक सेवा चयन आयोग की परीक्षा में 142वां रैंक हासिल हुआ। वैसे तो मैं किसी अन्य प्रशासनिक सेवा में जा सकती थी परंतु पूज्य पिताजी की अनुप्रेरणा से मैंने भारतीय रेल लेखा सेवा में योगदान करने का निश्चय किया।

किसी व्यक्ति को जीवन में सफलता पाने के लिए क्या करना चाहिए ?

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता है। मेरा मानना है कि परिश्रम से बढ़कर कोई चीज नहीं है। अगर हम सच्ची लगन से परिश्रम करें तो निश्चित ही सफलता कदम चूमेगी।

मालदा मंडल में गाड़ियों के आवागमन को और अधिक बेहतर बनाने के लिए आप क्या कोई नया कदम उठा रही हैं, यदि हां तो किस तरह का ?

मालदा मंडल में रेल गाड़ियों के परिचालन में सुधार के लिए दोहरीकरण, विद्युतीकरण, आवश्यक ब्लॉक प्रदान कर, स्टेशनों का विकास, यात्री सुविधाओं में विस्तार आदि कार्य निरंतर किए जा रहे हैं।

मालदा मंडल में चलने वाली गाड़ियों से होने वाली आय क्या उनके ऊपर होने वाले व्यय को वहन करने में सक्षम है ? इस मंडल में चलने वाली रेलगाड़ियों से होने वाली आय को बढ़ाने के लिए क्या आप किसी नई योजना को क्रियान्वित करना चाहेंगी ?

आपको यह बताते हुए मुझे हर्ष हो रहा है कि मालदा मंडल का परिचालनिक अनुपात लगभग 92% है जो कि पूर्व रेलवे के समेकित अनुपात की तुलना में काफी बेहतर है। मंडल की आय को बढ़ाने के लिए कोयले की लदान में बढ़ोतरी के सभी आवश्यक प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए संबंधित आपूर्तिकर्ताओं के द्वारा माल ढुलाई में लदान को बढ़ाने के लिए आवश्यक सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण किया जा रहा है।

मालदा मंडल में सवारी गाड़ियों के परिचालन में सुधार के लिए क्या आपकी कोई विशेष कार्य योजना हैं, अगर हाँ तो क्या ?

सवारी गाड़ियों के परिचालन में आने वाले समय में दोहरीकरण और विद्युतीकरण का कार्य पूरा हो जाने से काफी सुधार होगा। नई लूप लाइनों के निर्माण एवं नई लाइनों के संयोजन से परिचालन में बेहतर हो जाएगा।

मालदा मंडल में पर्यावरण की रक्षा के लिए आप निरंतर प्रयत्न कर रही हैं इसके संबंध में कुछ बताइए।

मेरा यह मानना है कि हमें अपने परिवेश को दूषणमुक्त रखना चाहिए जिससे हमारी आने वाली पीढ़ियों को हम बेहतर जीवन उपहार में दे सके। वृक्ष न केवल साफ और स्वच्छ वातावरण प्रदान करते हैं बल्कि भूजल के स्तर को बनाए रखने में समर्थ हैं। इसके लिए वृक्षारोपण की नितांत आवश्यकता है। इसी क्रम में हमने इस मंडल में अबतक 25 हजार से अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण को सहेजने की दिशा में एक छोटा सा प्रयास किया है।

क्या आपकी साहित्य, संगीत या कला के क्षेत्र में भी कोई रुचि है – यदि है तो आप उसके लिए क्या करती हैं ?

मुझे इंटिरियर डिजायनिंग का शौक है। अगर मैं रेल सेवा में अधिकारी नहीं होती तो आतंरिक साज सज्जा के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाती। मुझे सौंदर्यपरक चीजें पसंद है। मेरा यह मानना है कि प्रकृति के प्रत्येक वस्तु में अद्भुत सौंदर्य है और उस सौंदर्य को साज सज्जा के माध्यम से उभारने का प्रयास होना चाहिए। मैंने इसी उदेश्य से मालदा टाउन रेलवे स्टेशन, रनिंग रूम व यांत्रिककृत लांड्री की दिवारों को खुबसूरत पेंटिंगों से सजाने का प्रयास किया है।

कार्यालय से घर जाने के बाद आप अपने समय का उपयोग कैसे करती हैं – कुछ बताइए ।

घर जाकर अपने कार्यालयी कार्यों से इतर निजी शौक को पूरा करने के लिए विश्व के उत्कृष्ट लेखकों की रचनायें पढ़ती हूं। मुझे टेलीविजन देखना एवं संगीत सुनने का शौक है। गृह कार्य करने में भी रूचि है और अपने परिवार के सदस्यों की पसंद का भोजन बनाना अच्छा लगता है।

पूर्व रेलवे के मालदा मंडल में राजभाषा का प्रचार-प्रसार करने के कुछ कारगर उपाय बताइए।

राजभाषा के प्रचार प्रसार के लिए हिंदी में बोलचाल को बढ़ावा दिया जाए, कार्यालय में संपादित किए जाने वाले कार्यों में हिंदी के सरल शब्दों का प्रयोग अधिकाधिक किया जाए ताकि लोग सहजता से कार्य संपन्न कर पाएं।

***बढ़ते कदम* को और अधिक बेहतर और उपयोगी बनाने के लिए आप अपना कोई सुझाव देना चाहेंगी ?**

बढ़ते कदम को उपयोगी बनाने के लिए इस पत्रिका में हिंदी के प्रमुख लेखकों ओवर साहित्यकारों की कृतियों को संक्षिप्त रूप में छापा जाए। उनके व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में पाठकों को अवगत कराने के लिए उनकी रचनाओं जैसे उपन्यास, कविताओं, यात्रा संस्मरण और समीक्षाओं को संक्षिप्त रूप में प्रकाशित किया जाए।

बढ़ते कदम के पाठकों के लिए विशेष संदेश देना चाहेंगी ?

बढ़ते कदम के सुधी पाठकों के लिए मेरा निवेदन होगा कि हम अपने धरोहर को संभाल कर रखें। अपने पर्यावरण को सहेजें, कूड़ा कचरा व पॉलीथिन यत्र तत्र न फेंककर उसका सही तरीके से निपटान करें। वृक्षारोपण के द्वारा पृथ्वी को हरा भरा बनाने में अपना योगदान दें। खुद भी पेड़ लगाये और दूसरों को भी पेड़ लगाने को प्रेरित करे।

प्रस्तुति— इंद्रज्योति राय

ऑप्टिकल फाइबर

ऑप्टिकल फाइबर ग्लास या प्लास्टिक के बाल जैसा पतले थ्रेड्स हैं,जो डेटा ट्रांसमिशन माध्यम के लिए केबल के रूप में प्रयोग किया जाता है। तांबे के तार वाले केबल की तुलना में इसमें बुनियादी अंतर यह है कि ऑप्टिकल फाइबर विद्युत संकेतों के बजाय प्रकाश संकेत प्रेषित करते हैं। क्योंकि प्रकाश बिजली की तुलना में बहुत तेजी से यात्रा करता है, जिसके फलस्वरूप ऑप्टिकल फाइबर तांबे के तारों या समाक्षीय केबल की तुलना में बहुत अधिक गति पर डेटा संचारित कर सकते हैं और बहुत लंबी दूरी होने पर भी इसकी तीव्रता में कोई महत्वपूर्ण नुकसान नहीं होता है।

1970 के दशक में पहली बार विकसित, फाइबर ऑप्टिक्स ने दूरसंचार उद्योग में क्रांति ला दी और सूचना युग के आगमन में एक प्रमुख भूमिका निभाई। विद्युत संचरण की तुलना में अधिक फायदों के कारण, ऑप्टिकल फाइबर ने विकसित दुनिया में प्रमुख नेटवर्कों में तांबा के तार के द्वारा होने वाले संचार में बड़े पैमाने पर बदलाव किया है।

ऑप्टिकल फाइबर की अभी तक निम्न पीढ़ियाँ विकसित हुई हैं।

मल्टी–टेराबिट ऑप्टिकल नेटवर्क

डेंस वेव डिवीजन मल्टीप्लेक्सिंग (डीडब्लूडीएम) मल्टी-टेराबिट प्रसरण के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। वर्धित बैंडविड्थ की आवश्यकता ने मल्टी-टेराबिट ऑप्टिकल नेटवर्क के विकास में रुचि पैदा कर दी है। शोधकर्ता 100 जीबीपीएस वाले उच्च बैंडविड्थ को प्राप्त करने पर विचार कर रहे हैं। फाइबर ऑप्टिक घटकों की लागत में लगातार कमी के साथ, भविष्य में बेहतर बैंडविड्थ की उपलब्धता संभव है।

इंटेलीजेंट ऑप्टिकल ट्रांसमिशन नेटवर्क

बैंडविड्थ के गतिशील आबंटन की अनिश्चितता के कारण पारंपरिक ऑप्टिकल नेटवर्क तेजी से विकसित होने वाली डेटा सेवाओं के लिए अनुकूल नहीं होते हैं। वे मुख्य रूप से नेटवर्क कनेक्टिविटी के मैन्युअल कॉन्फ़िगरेशन पर निर्भर करते हैं, जो अधिक समय लेते हैं और आधुनिक नेटवर्क की मांगों को पूरा करने में सक्षम नहीं होते हैं। इंटेलीजेंट ऑप्टिकल नेटवर्क ऑप्टिकल नेटवर्क के विकास में एक भावी ट्रेंड है और इसमें बैंडविड्थ आबंटन की अनिश्चितता को अपनाने की क्षमता हो जाएगी।

पॉलिमर ऑप्टिकल फाइबर

पॉलिमर ऑप्टिकल फाइबर तांबा केबल, बेतार संचार प्रणाली और ग्लास फाइबर जैसे अन्य डेटा संचार समाधानों की तुलना में कई लाभ प्रदान करते हैं। ग्लास ऑप्टिकल फाइबरों की तुलना में, पॉलिमर ऑप्टिकल फाइबर ऑप्टिकल संकेतों का आसान और कम महंगा प्रसंस्करण प्रदान करते हैं और अधिक लचीला होते हैं।

केबल बनाम फाइबर इंटरनेट

भारतीय प्रौद्योगिकी बाजार ने पिछले छह महीनों में इंटरनेट के क्षेत्र में कुछ बड़े विकास देखे हैं। रिलायंस जियो 4जी सेवाओं द्वारा शुरू किए गए एक ट्रेंड ने बाजार में हलचल मचा दी और यहाँ तक कि अन्य दूरसंचार ऑपरेटरों को भी सस्ती 4जी इंटरनेट सेवाएँ प्रदान करने के लिए मजबूर कर दिया। जबकि अन्य दूरसंचार कंपनियाँ अभी भी इस दुविधा में हैं कि रिलायंस की इतनी सस्ती इंटरनेट योजनाओं से कैसे निपटा जाए, रिलायंस ने भारतीय इंटरनेट को वैश्विक पैमाने पर स्थान दिलाने के लिए फाइबर ऑप्टिक्स पर आधारित सुपर फास्ट इंटरनेट गीगाफाईबर योजना की भी पेशकश कर ली है।

फाइबर ऑप्टिक इंटरनेट संचार के क्षेत्र में अपेक्षाकृत एक नई तकनीक है और यह स्रोत से गंतव्य तक डेटा संचारित करने के लिए फाइबर ऑप्टिक केबल का इस्तेमाल करता है। एक फाइबर ऑप्टिक केबल ग्लास या मिश्रित प्लास्टिक के अत्यंत पतली स्ट्रैंडों, जिन्हें ऑप्टिकल फाइबर के रूप में जाना जाता है, से बनता है।

सूचना या डाटा प्रकाश या ऑप्टिकल तकनीक पर प्रसारित होता है, जिसके लिए प्रकाश को समग्र आंतरिक परावर्तन के सिद्धांत का पालन करने की आवश्यकता होती है। यदि प्रकाश लीक होता है, जो कांच के स्ट्रैंडों द्वारा प्रकाश पैकेटों के अवशोषित किए जाने की स्थिति में होता है, तो संचार में समस्या आती है। जहाँ तक पारंपरिक केबल इंटरनेट का संबंध है, संचार का यह रूप मौजूदा टेलीफोन नेटवर्क का उपयोग करता है और उपयोगकर्ता को एक केबल मॉडेम रखने की आवश्यकता होती है। डाटा को समाक्षीय केबलों के माध्यम से स्थानांतरित किया जाता है।

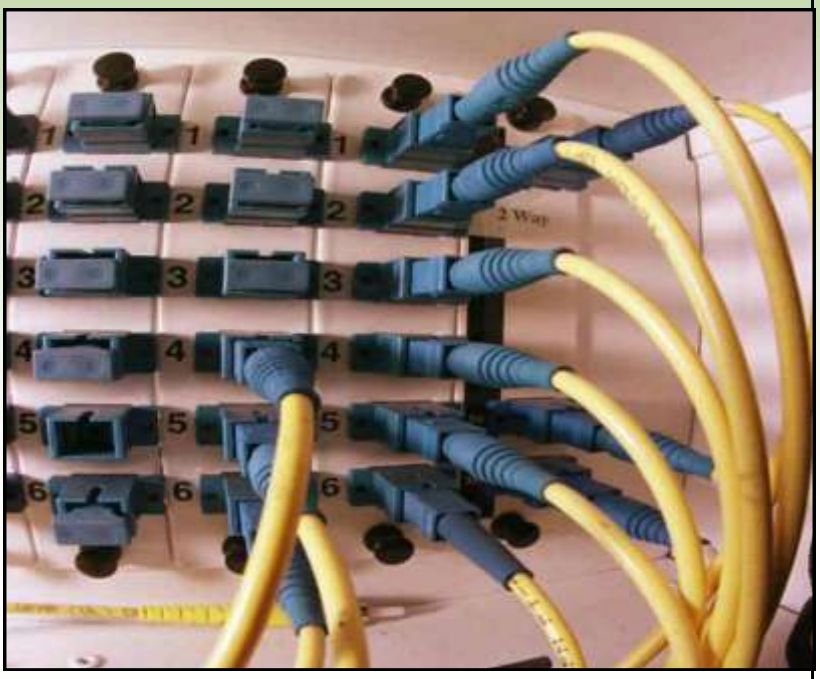

चूँकि ऑप्टिक फाइबर नेटवर्क में डाटा को पैकेट के रूप में प्रकाश के माध्यम से प्रेषित किया जाता है, संचार की गति पारंपरिक एडीएसएल ब्रॉडबैंड की तुलना में बहुत तेज होती है। फाइबर नेटवर्क से डेटा को अधिक दूरी तक तेजी से भेजा जा सकता है। हालांकि एक फाइबर नेटवर्क स्थापित करने की प्रक्रिया अधिक जटिल होती है और पारंपरिक केबल नेटवर्क की तुलना में अधिक समय लेती है।

ऑप्टिक फाइबर विश्वसनीयता के मामले में भी केबल नेटवर्क से बेहतर है। ऐसा इसलिए है क्योंकि डाटा को बिजली से नहीं प्रकाश से प्रसारित किया जाता है। इसलिए, इसमें विद्युत जाने पर या जैसा आम तौर पर किसी भी भौतिक क्षति पर पारंपरिक केबल नेटवर्क के साथ होता है, संचार प्रभावित नहीं होता है।

भारतीय दूरसंचार उद्योग के लिए, ऑप्टिक फाइबर ने कनेक्टिविटी के तीसरे युग के बहु-आकांक्षित लहर की शुरुआत कर दी है। ऑप्टिक फाइबर को प्रारंभ किए जाने से पहले, ब्रॉडबैंड सेगमेंट कॉपर तार पर पूरी तरह निर्भर था। ब्रॉडबैंड को निर्दिष्ट डाउनलोड गति के साथ हमेशा चालू रूप में परिभाषित किया जाता है और ब्रॉडबैंड में अच्छी गुणवत्ता का अनुभव होना चाहिए। हाल ही में, सरकार और भारतीय दूरसंचार ऑपरेटर दोनों अचानक ऑप्टिक फाइबर केबलों का बढ़ चढ़कर इस्तेमाल करने के लिए प्रयास कर रहे हैं क्योंकि भविष्य इसी में है। भारत नेट परियोजना और डिजिटल इंडिया अभियान को प्रेरित करते हुए भारत सरकार भारतीय दूरसंचार क्षेत्र में ऑप्टिक फाइबर युग के लाभों और जरूरतों का प्रचार कर रही है।

विकसित अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों ने ऑप्टिक फाइबर का बहुत पहले से ही प्रयोग शुरू कर दिया था। जब बात ब्रॉडबैंड बैंड विड्थ और गति की आती है तो भारत इन देशों से काफी पीछे है। दरअसल, ऑप्टिक फाइबर उस परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक है, जिसे जोरदार ढंग से भारतीय अर्थव्यवस्था में शामिल करने की जरूरत है।

— संजीव कुमार

नाट्य शास्त्र

नाटकों के संबंध में शास्त्रीय जानकारी को **नाट्य शास्त्र** कहते हैं। इस जानकारी का सबसे पुराना ग्रंथ भी **नाट्यशास्त्र** के नाम से जाना जाता है जिसके रचयिता भरत मुनि थे। भरत मुनि का काल 400 ईपू के निकट माना जाता है। संगीत, नाटक और अभिनय के संपूर्ण ग्रंथ के रूप में भारतमुनि के नाट्य शास्त्र का आज भी बहुत सम्मान है। उनका मानना है कि नाट्य शास्त्र में केवल नाट्य रचना के नियमों का आकलन नहीं होता बल्कि अभिनेता रंगमंच और प्रेक्षक इन तीनों तत्वों की पूर्ति के साधनों का विवेचन होता है।

37 अध्यायों में भरतमुनि ने रंगमंच अभिनेता अभिनय नृत्यगीत वाद्य, दर्शक, दशरूपक और रस निष्पत्ति से संबंधित सभी तथ्यों का विवेचन किया है। भरत के नाट्य शास्त्र के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि नाटक की सफलता केवल लेखक की प्रतिभा पर आधारित नहीं होती बल्कि विभिन्न कलाओं और कलाकारों के सम्यक के सहयोग से ही होती है।

इस ग्रंथ में प्रत्यभिज्ञा दर्शन की छाप है। प्रत्यभिज्ञा दर्शन में स्वीकृत 36 मूल तत्वों के प्रतीक स्वरूप नाट्यशास्त्र में 36 अध्याय हैं। पहले अध्याय में नाट्योत्पत्ति, दूसरे में मंडपविधान देने के पश्चात् अगले तीन अध्यायों में नाट्यारम्भ से पूर्व की प्रक्रिया का विधान वर्णित है। छठे और सातवें अध्याय में रसों और भावों का व्याख्यान है, जो भारतीय काव्यशास्त्र में व्याप्त रससिद्धान्त की आधारशिला है। आठवें और नवें अध्याय में उपांग एवं अंगों द्वारा प्रकल्पित अभिनय के स्वरूप की व्याख्या कर अगले चार अध्यायों में गति और करणों का उपन्यास किया है। अगले चार अध्यायों में छन्द और अलंकारों का स्वरूप तथा स्वरविधान बतालाया है।

नाट्य के भेद तथा कलेवर का सांगोपांग विवरण 18 वें और 19 वें अध्याय में विवेचन किया है। तत्पश्चात् 29 वें अध्याय में विविध प्रकार के अभिनयों की विशेषताएँ दी गई हैं। 29 से 34 अध्याय तक गीत वाद्य का विवरण देकर 35 वें अध्याय में भूमि विकल्प की व्याख्या की है। अंतिम अध्याय उपसंहारात्मक है।

यह ग्रंथ मुख्यत: दो पाठान्तरों में उपलब्ध है 1. औत्तरीय पाठ और 2. दाक्षिणात्य। पाण्डुलिपियों में एक और 37 वाँ अध्याय भी क्वचित् उपलब्ध होता है जिसका समावेश निर्णयसागरी संस्करण में संपादक ने किया है। वस्तुत: यह ग्रंथ नाट्यसंविधान तथा रससिद्धांत की मौलिक संहिता है।

इसकी मान्यता इतनी अधिक है कि इसके वाक्य 'भरतसूत्र' कहे जाते हैं। सदियों से इसे आर्ष सम्मान प्राप्त है। इस ग्रंथ में मूलत: बारह हजार पद्य तथा कुछ गद्यांश भी था, इसी कारण इसे 'द्वादशसाहस्री संहिता' कहा जाता है। परंतु काल क्रमानुसार इसका संक्षिप्त संस्करण प्रचलित हो चला जिसका आयाम छह हजार पद्यों का रहा और यह संक्षिप्त संहिता 'षटसाहस्री' कहलाई।

भरतमुनि उभय संहिता के प्रणेता माने जाते हैं और प्राचीन टीकाकारों द्वारा उनका 'द्वादश साहस्रीकार' तथा 'षट्साहस्रीकार' की उपाधि से परामर्श यत्र तत्र किया गया है। जिस तरह आज उपलब्ध चाणक्य नीति का आधार वृद्ध चाणक्य और स्मृतियों का आधार क्रमश: वृद्ध वसिष्ठ, वृद्ध मनु आदि माना जाता है, उसी तरह वृद्धि भरत का भी उल्लेख मिलता है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि वसिष्ठ, मनु, चाणक्य, भरत आदि दो दो व्यक्ति हो गए, परंतु इस संदर्भ में 'वृद्ध' का तात्पर्य परिपूर्ण संहिताकार से है।

— सुप्रिया

सिर दर्द का यौगिक समाधान

आधुनिक और भौतिकवाद की तेज रफ्तार से चलने वाली दुनिया में सर दर्द आम बात है। आज के समय में शायद ही कोई ऐसा हो जिस सिर दर्द नहीं हुआ हो। आइए इसके विषय में जानते है कि यह कैसे होता है और इसका समाधान क्या है।

इस रोग के लक्षण

-रक्त नलिकाओं से उठने वाले दर्द- इसमें दर्द प्रत्येक धड़कन के साथ बढ़ता और घटता है। इसमें आधा सर या माइग्रेन तथा उच्च रक्तचाप में होने वाले सर दर्द का संबंध बाह्य कापालिक रक्त नलिकाओं के फैलने से है।

पीसीए का अति संकुचन- सर दर्द का मुख्य कारण है पीसीए का अति संकुचन की तीव्रता के अनुरूप लंबे समय तक निरंतर कड़ेपन का अनुभव करती है और काफी तीव्र पीड़ा होती है। सर दर्द सर के दोनों ओर एक समान होता है।

संप्रेषित सर दर्द (रेफरेड हेडेक) -जब आंखों से या नासिका से दर्द संप्रेषित होकर सर में महसूस होता है। सर्दी जुकाम साइनोसाइटिस, जैसे रोग से सर दर्द उत्पन्न होता है।

तनाव के कारण सर दर्द- मानसिक अथवा भावनात्मक तनाव से सर दर्द होता है। इसमें सिर के ऊपर भारीपन, सिर के चारों ओर पट्टी की भांति कसाव का अनुभव होता है। इसमें आंखों में और ललाट में भी दर्द होता है। इसमें माइग्रेन एवं तनाव तथा अन्य सिर दर्दों दो महत्वपूर्ण प्रकार हैं।

माइग्रेन में पारिवारिक प्रवणता पाई जाती है। मगर यह भी प्रमाणित नहीं हुआ है कि माइग्रेन अनुवांशिक है या व्यवहारात्मक विरासत है। माइग्रेन का दर्द के दौरे कुछ दिनों से लेकर कुछ महीने के अंतराल से उठते हैं। माइग्रेन के प्रकोप का प्रथम लक्षण सामान्यता प्रकाश का झिलमिलाहट, आड़ी तिरछी रेखाएं किसी हाथों में सुन्नता का अनुभव। इस तरह के अनुभव लगभग आधे घंटे तक चलता है। इस माइग्रेन के पूर्वाभास के लक्षण हैं।

इसके बाद तीव्र सर दर्द का दौर चलता है। दर्द एक बिंदु से धीरे-धीरे आधे सिर में फैल जाता है। दर्द इतना तीव्र होता है कि आदमी पसीने-पसीने हो जाता है। उल्टियां आती है। आदमी शक्तिहीन हो जाता है। प्रकाश से दूर भागता है और अंधेरे में रहना चाहता है और तीव्र दर्द के कारण जोर-जोर से कराहता है।

तनाव जन्य सर दर्द- माइग्रेन और तनाव जन सरदर्द दोनों ही मानसिक भावनात्मक तनाव से संबंधित हैं। तनाव के कारण तंत्रिका तंत्र सिर की त्वचा के नीचे पतली मांस पेशियों को या ग्रीवा की पेशियों को प्रभावित करता है जिससे दर्द की अनुभूति होती है। यौगिक उपचार इस रोग के उपचार में मेडिकल साइंस की जो कमियां और खामियां हैं योग का अभ्यास उन्हें दूर कर उपचार पद्धति को संपूर्णता प्रदान करता है।

योग की क्रियाएं मस्तिष्क में रसायनों के श्रवण चक्र को उनकी मात्रा के अनुपात को पुनर्व्यवस्थित करता है। योग द्वारा प्राण शक्ति के प्रवाह के अवरोध दूर होते हैं वह पूरे शरीर में प्राणों का संचार बेहतर तरीके से प्रारंभ हो जाता है। नीति एवं कुंजल माइग्रेन एवं आधी सर दर्द के उपचार हेतु 2 आधारभूत हठयोगी क्रियाएं हैं। अगर माइग्रेन के रोगी को स्वच्छ उल्टियां हो जाए तो लक्षण की तीव्रता घट जाती। रोग को जड़ से मिटाने के लिए इन क्रियाओं को रोज प्रातः काल अभ्यास करना चाहिए।

हठयोग- कुंजल प्रतिदिन कुछ दिनों तक फिर हफ्ते में एक या दो दिन तक। नेति प्रतिदिन शंख प्रक्षालन एक बार सप्ताह में किसी योग शिक्षक की देखरेख में। लघु शंखप्रक्षालन हफ्ते में एक बार। आसन- सूर्य नमस्कार, पवनमुक्तासन भाग 1, प्राणायाम - हल्का भस्त्रिका प्राणायाम, नाड़ी शोधन प्राणायाम, भ्रामरी प्राणायाम भोजन- हल्का शाकाहारी सुपाच्य भोजन करें। भोजन अधिक मात्रा में न खाएं। तनाव अवस्था में एक समय भोजन न करें तो बेहतर होगा। — **जनार्दन प्रसाद**

भगवान सब कुछ देख रहा है

भगवान सब कुछ देख रहा है इस घोर कलयुग में भी भगवान इस धरा पर है और आपका हमारा तथा तुम्हारा पाप-पुण्य न्याय –अन्याय, घृणा -द्वेष ईर्ष्या- डाह काम- क्रोध ,लोभ आदि को भगवान सब देख रहे हैं। इसके बावजूद भगवान किसी को दिखाई क्यों नहीं पड़ती ? दरअसल भगवान एक अदृश्य सत्ता है जैसे बिजली के तार में विद्युत का प्रवाह दिखाई नहीं पड़ती, जल की शीतलता, सूरज की गर्मी दिखाई नहीं पड़ती इसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है ठीक उसी प्रकार भगवान सर्वत्र व्याप्त हैं वह कण- कण में विद्यमान हैं, सारे ब्रह्मांड में हैं परंतु दिखाई नहीं पड़ता। भगवान किसी भी रूप धारण करने में सक्षम हैं और वह जरूरतमंदों की मदद भी करते हैं। किसी न किसी रूप में या दूसरे के द्वारा मदद करवाते हैं तभी तो कहा गया है कि भगवान की मर्जी के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिलता।

भगवान हम लोगों के आसपास हैं, साथ साथ हैं, परंतु इसे इन आंखों से देखना संभव नहीं है इसे अवश्य महसूस किया जा सकता है। भगवान आज तक किसी ज्ञानी, वैज्ञानिक या अधिक पढ़े लिखे लोगों को दिखाई नहीं पड़ता कारण वे लोग हर बात को प्रयोगशाला में सिद्ध करना चाहते हैं इसीलिए भगवान हमेशा कम पढ़े लिखे लोगों को, सच्चे भक्तों को, जिनको ईश्वर पर अटूट विश्वास हो उन्हें ही दिखाई देते हैं तथा उन्हें हमेशा साथ रहने का अनुभव भी होता है। निःस्वार्थ भाव से सेवा करने वालों को भगवान का साथ होने का एहसास होता है। 99 के फेरे में रहने वाले को कदापि नहीं।

एक कथा है कि एक गरीब ब्राह्मण रात दिन एक मंदिर में पूजा-अर्चना तन मन धन से करता था जो मिलता था उसी से परिवार का भरण पोषण करता था तथा बहुत ही कठिनाई से उसकी गृहस्थी चलती थी। ब्राह्मण को एक कन्या थी जो धीरे -धीरे शादी योग्य हो गई। पत्नी रोज करने हेतु वर की तलाश करने के लिए झगड़ा करती लेकिन ब्राह्मण हमेशा कहते- "सब कृष्णा करेंगे अर्थात मेरे भगवान करेंगे"। सचमुच भगवान की कृपा से बड़े घराने से संबंध आया तथा लड़की पसंद भी हो गई। जब लेन-देन की बात चली तो लड़के के माता-पिता द्वारा लंबी चौड़ी लिस्ट थमाई गई। भक्त पिता ने सबकुछ स्वीकार कर लिया परंतु लड़की की मां डर रही थी कि कहां से इतना दान-दक्षिणा पूरा करेंगे, हो ना हो बारात दरवाजे से ही न लौट जाए, अतः अपने पति से इस संबंध में जब भी पूछती तो यही कहते कि- "जिसने शादी तय करवाया है वही दान दक्षिणा भी देंगे"। शादी के पूर्व ही श्री कृष्ण सेठ का रूप धारण कर मांग की गई सारी सामग्री पहुंचा दिए। अतः बारात के दिन तथा शादी के समय इस संबंध में कोई बातचीत नहीं करते देख लड़की की मां घोर आश्चर्य कर रही थी। लड़की विदा भी हुई और सुख से रहने लगी। भक्तों की लाज रखने के लिए कृष्ण ने सारी मांगें पूरी कर दिए। आज भी जो लोग ईश्वर पर अटूट श्रद्धा रखते हैं तथा सच्चे मन से परम सत्ता को याद करते हैं उनकी सारी परेशानियां भगवान अवश्य दूर कर देते हैं।

पूजा-पाठ ध्यान आदि ईश्वर प्राप्ति का एक साधारण विधि मात्र है परंतु हर युग में कर्म की प्रधानता रही है। कर्म का फल मिलेगा ही इसमें ईश्वर कोई हस्तक्षेप नहीं करता जैसे आपको आम खाने की इच्छा है तो आपको आम का ही पौधा लगाना पड़ेगा। कटहल का पेड़ लगाकर आप रात दिन राम राम जपते रहेंगे तो कटहल का पौधा कभी नहीं आम फलेगा। ठीक उसी प्रकार प्रत्येक कर्म के साथ कर्मफल जुड़ा हुआ है यदि आप अपनी भलाई चाहते हैं तो आपको पहले दूसरों की भलाई करनी होगी बिना दूसरों की भलाई किए आपकी भलाई नहीं होगी। आप रात दिन दूसरों की बुराई सोचते हैं तो आपका भला कैसे होगा ? यदि आप किसी को ठगते हैं या धोखा देते हैं तो मन में गांठ बांध लीजिए कि उसका चक्रवृद्धि के हिसाब से धन बढ़ता जा रहा है और उसे चुकाए बिना आपका कल्याण नहीं हो सकता। इस जन्म में कर्ज नहीं चुका है तो उस का कर्ज चुकाने हेतु आप को उसके घर कुत्ता गाय, बैल ,नौकर बन कर पूर्व जन्म का लिया गया ऋण या ठगा

पैसा वसूल करना होगा। अतः किसी को ठगने का प्रयास नहीं करें हो सके तो सुकर्म करें। किसी असहाय की मदद करें, धर्मार्थ का काम करें, स्कूल कॉलेज अस्पताल बनाएं ,इससे आप ही नहीं आपके आने वाली संतति भी तर जाएगी। एक अपराध पूरे वंश को बदनाम कर देता है तो एक सुकर्म भी पूरे वंश को गौरवान्वित कर सकता है।अतः सुकर्म कर। भगवान अलग अलग है यह भी मनुष्य का भ्रम है। सभी एक ही सत्ता के विभिन्न रूप हैं जैसे एक ही नदी के विभिन्न घाट होते हैं।

कुछ करो सुकर्म मत पालो भ्रम
करनी का फल मिलना निश्चित है
लाख करले जतन रे भैया
मानव जीवन मिला है यह क्या कम है ?
क्यों बर्बाद करते हो अमर विलक्षण जीवन !
खाना पीना और मर जाना यह मानव का संस्कार नहीं
जियो और हर प्राणी को जीने दो
जीवन का लक्ष्य बनाओ
अपनी जिह्वा स्वाद खातिर किसी जीव जंतु को मत वध करो
करनी का फल मिलेगा ही चाहे लाख करो जतन
मत पालो कोई मन में भ्रम
कुछ तो भैया करो सुकर्म

कर्म का फल मिलना निश्चित है तो कम से कम से कम अपने कर्म को सुधारिए।कर्म सुधारने हेतु अपने रहन-सहन खान -पान तथा सोच में सुधार लाए बिना यह संभव नहीं है। लोग नए मकान बनाते हैं, वास्तु शास्त्र का विचार अनुसार निर्माण कराते हैं, घर में भगवान का पूजा घर बनाते हैं, सोफा सेट अलमीरा आदि सजाते हैं गृहप्रवेश कराने के लिए धूमधाम से पूजा करते हैं ताकि घर में ईश्वर का वास हो।क्या किसी मंदिर में मांस, मछली, अंडा आदि ले जाता है कोई ? नहीं ,क्योंकि इनका प्रवेश वर्जित है और जिस घर को लाखों खर्च कर बनाया उस घर में पहले ही दिन मांस मछली का भोग करते हैं तो क्या भगवान आपके घर में टिकेगा? आपका घर नहीं श्मशान बन जाएगा तो क्या, श्मशान में कोई देवता पवित्र आत्मा का निवास हो सकता है? क्या जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो तुरंत उसे घर से बाहर निकाल दिया जाता है तथा सोफा पलंग नहीं बांस की चचरी पर लिटाकर शमशान तक ले जाता है ठीक इसके विपरीत हम किसी पशु पक्षी के पार्थिव शरीर को अपने रसोई घर में लाते हैं तथा पकाकर उसे स्वयं खाते हैं तथा औरों को भी खिलाते हैं ,तो क्या आपका किचन पवित्र माना जाएगा ? इससे दो-दो पाप लगता है। एक जीव हत्या का दूसरा पशु को पकाकर खाने का।तो भला ऐसे घर में प्रभु का निवास कैसे हो सकता है ? शमशान में भी हम लोग सिर्फ मुर्दा जलाते हैं उसे जला कर खाते नहीं हैं जबकि घर में पवित्र रसोईघर में पशु पक्षी की लाश जलाते हैं और खाते भी हैं ऐसे स्थान पर कोई देवी देवता की बात की बात तो छोड़ ही दीजिए कोई पवित्र आत्मा भी एक क्षण भी नहीं टिकेगी और इसे खाने वालों को सौ फिसदी मानव कहना भी भूल होगी।प्रसंगवश एक छोटी कथा याद आ रही है एक बार संत कबीर जी प्रवचन कर रहे थे कि मनुष्य सभी प्राणियों में से अधम हैं, इस पर कुछ श्रोता भड़क उठे और कहा आप स्वयं मनुष्य होकर भी ऐसी बातें कर रहे हो। कृपया प्रमाणित करो कि मनुष्य सभी प्राणियों में अधम है अन्यथा हम आपको दंड देंगे। संत कबीर दास ने शर्तों को स्वीकार किया तथा कुछ सेवकों को एक थाल में फल, काजू -किसमिस ,मिठाई, पुआ- पकवान लाने को कहा तथा साथ में दो चार कुत्ते को भी तथा व्यक्ति को थाल कुत्ते के सामने रखने का आदेश दिया तत्पश्चात सब ने गौर किया कि कुत्ते स्वादिष्ट पदार्थ को खाने की बात तो दूर सूंघना भी पसंद नहीं किया। अब दूसरे व्यक्ति को एक थाल में मांस मछली लाकर कुत्ते के पास रखने का आदेश दिया

कुत्ता तुरंत खाने लगा। इस पर कबीर दास ने लोगों को समझाया आप लोग जब मंदिर में या मस्जिद में पूजा पाठ करते हो तो यह कुत्ता जोर-जोर से भौंककर परमात्मा से प्रार्थना करता है कि" हे प्रभु मैंने आज तक मानव का आहार नहीं खाया है परंतु मानव का नैतिक पतन इतना हो गया है कि वह स्वयं के लिए बनाए गए भोजन तो करता ही है मेरा आहार भी चट कर जाते हैं इसीलिए मनुष्य को कुत्ता बना दीजिए और हम कुत्तों को मनुष्य"। सचमुच आज मानव कुत्ता बन गया है भले पिछले कर्मों से मानव योनि में जन्म लिया हो तभी तो आज 2 वर्ष की अबोध बच्ची से भी बलात्कार हो रहा है क्या कोई मनुष्य ऐसा कर सकता है प्रसंगवश एक छोटी कथा याद आ रही है एक बार संत कबीर जी प्रवचन कर रहे थे कि मनुष्य सभी प्राणियों में से अधम हैं इस पर कुछ श्रोता भड़क उठे और कहा आप स्वयं मनुष्य होकर भी ऐसी बातें कर रहे हो कृपया प्रमाणित करो कि मनुष्य सभी प्राणियों में अधम है अन्यथा हम आपको दंड देंगे। संत कबीर दास की शर्तों को स्वीकार किया तथा कुछ सेवकों को एक थाल में फल ,काजू किसमिस, मिठाई, पुआ ,पकवान लाने को कहा तथा साथ में दो चार कुत्ते को भी लाए हुए व्यक्ति के सामने रखने का आदेश दिया तत्पश्चात सब ने गौर किया कि कुत्ते स्वादिष्ट पदार्थ को खाने की बात तो दूर सूंघना भी पसंद नहीं किया।

अब दूसरे व्यक्ति को एक थाल में मांस- मछली लाकर कुत्ते के पास रखने का आदेश दिया। कुत्ता तुरंत खाने लगा। इस पर कबीर दास ने लोगों को समझाया आप लोग जब मंदिर में या मस्जिद में पूजा पाठ करते हो तो यह कुत्ता जोर-जोर से भौंककर परमात्मा से प्रार्थना करता है कि "हे प्रभु मैंने आज तक मानव का आहार नहीं खाया है परंतु मानव का इतना नैतिक पतन हो गया है कि वह स्वयं के लिए बनाए गए भोजन तो करता ही है मेरा आहार भी चट कर जा रहे हैं इसीलिए मनुष्य को कुत्ता बना दीजिए और हम कुत्तों को मनुष्य"। सचमुच आज मानव कुत्ता बन गया है।भले पिछले कर्मों से मानव योनि में जन्म लिया हो तभी तो आज 2 वर्ष की अबोध बच्ची से भी बलात्कार हो रहा है क्या कोई मनुष्य ऐसा कर सकता है भला? इस प्रकार के घृणित कार्य कोई कुत्ता स्वभाव वाला आदमी ही तो कर सकता है अतः अपने व्यवहार को सुधारिए तथा सौ फिसदी मानव बनने का प्रयास कीजिए।

अभी मानव 60% मानव और 40% पशु का मिश्रण बन गया है। तो किसी न किसी में 70% और 30% ही मनुष्यता बची है अतः अपनी पशुता को समाप्त कीजिए और सौ फिसदी मनुष्य बनने की कोशिश कीजिए अन्यथा आप अगले जन्म में कुत्ता या अन्य हिंसक पशु बनना तय मानिए। कुत्ता या अन्य प्राणी या मनुष्य बनना। सिर्फ आपके कर्मों पर निर्भर करेगा। आप स्वयं सोचिए कि आपको कुत्ता बनना है या आदमी और आदमी बनना है तो कितना प्रतिशत आदमी बनना है।

इन्हीं सब कारणों से हमारा घर मंदिर न बनकर श्मशान बन जाता है और उस घर से ईश्वर भाग जाते हैं और दुख ,अशांति कलह, मुकदमेबाजी, बीमारियां घर कर जाती है क्योंकि आपका घर शमशान है तो उसमें भूत-प्रेत तो रहेंगे ही न ।जहां भगवान रहते हैं वहां बुरी आत्माएं ठीक नहीं सकती। अगर घर में सुख समृद्धि चाहते हैं तो पशुता वाले व्यवहार को त्यागना होगा, सुकर्म करना होगा। बिना सुकर्म किए सुख, यश, मान-सम्मान मिलना संभव नहीं है। आपने अपने माता पिता को घर से निकाल दिया है तो तो फिर भी मान लें आपके बच्चे भी वही करेंगे जो आप कर रहे हैं अतः हर कर्म ईश्वर की मर्जी से होता है ऐसी थोथी दलीलें मत दे। रोपे पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय। अतः हर जगह कर्म की प्रधानता है, ईश्वर कुछ नहीं करता है। बस करनी का फल देता है अतः ईश्वर से शक्ति, बुद्धि ,साहस मांगिए ताकि मैं समाज में सत्य कार्य, परोपकार कर सकूं। भगवान सब देख रहा है इसका हमेशा ध्यान रखें तो बुरा कर्म स्वतः छूट जाएगा। जैसे पिताजी के सामने आप सिगरेट नहीं पीते हैं ।यदि सुधारना है तो आप अपने तथा परिवार को ईश्वर हर वक़्त साथ है, सब कुछ देख रहा है, ऐसा स्मरण रखें ।सब कुछ स्वतः ठीक हो जाएगा।

— सच्चिदानंद *जिज्ञासु*

मुझे अलग कर दो

मालती की शादी को तीन बरस बीत गए। पति दिन भर खेतों में काम करता। थक हार कर शाम को जब लौ] ता तब भाभी, भैया और मालती से मिलता। परिश्रमपूर्वक कार्य करने से सफलता तो मिलती है। श्याम सिंह के परिश्रम की बदौलत खेतों में खूब अनाज होता। अनाज से पूरा घर पटा रहता। खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। बड़े भाई राम सिंह के प्रति श्याम सिंह के मन में खूब आदर था। वे ही घर के मालिक थे। कमला भाभी घर की मालकिन। राम सिंह सुबह-सुबह उठते और भगवान की पूजा अर्चना में लग जाते। दिन में लोगों के मुकदमें देखते और बाकी बचे समय को अपने बच्चों को पढ़ाने में लगाते है। कुल मिला कर वे मालती की नजरों में बैठे रहते हैं। कमला मालकिन हैं इसलिए घर की सभा चाभियां उसके पास रहती हैं। वह खेतों से आने वाले अनाज को डीहरी में रखने लायक बनाती है और उसे ठीक ढंग से रखती हैं। वह अपने काम को अक्सर मजदूरों से कराती हैं।

मालती घर के सभी लोगों के लिए खाना बनाती है। उसके कार्य में कोई सहयोग नहीं करता। इस बात से उसे बहुत कष्ट होता है। उसकी दृष्टि में राम सिंह और कमला उसके और उसके पति की कमाई पर ऐश करते हैं। वह भीतर ही भीतर कुढ़ कर रह जाती है। उसने श्याम सिंह से इस विषय पर कई बार बात करना चाही है पर उसने इसे आगे बढ़ाने में कोई रुचि नहीं दिखाई इसलिए उसके मन में काफी रोष है। मालती ने सोच लिया है कि वह अपना खाना पकाएगी। वह भैया-भाभी से अलग रहेगी। पूरे परिवार में वे ही दोनों सबसे अधिक खटते हैं फिर भी भैया और भाभी मालिक क्यों रहेगें? उसने पति से अलग हो जाने को कहा पर उसने कहा-"क्यों अलग होगा?"

"हमीं लोग पूरे परिवार में क्यों खटते रहेगें?" "क्या भैया-भाभी कोई काम नहीं करते जो हम लोग अलग हो जायेंगे?" "क्या काम करते हैं ? भैया तो बस पूजा-पाठ, मुकदमे के अलावा अपने बच्चों को पढ़ाने के सिवा कोई काम नहीं करते हैं। सारी मेहनत तुम्हें करनी पड़ती है।" "मैं जब छोटा था तो पूरी गृहस्थी भैया ही चलाते थे। अब मैं देखता हूं। भतीजे बड़े हो जाएंगे। फिर वे सब खेती-बाड़ी का काम करेंगे। ऐसे ही जीवन चलता है।"

श्याम सिंह मालती को समझाकर खेतों पर चला गया। पर उसे किसी बात से संतोष नहीं हुआ। उसने निर्णय लिया कि वह उन लोगों से अलग रहेगी। भले ही इसके लिए जो कुछ भी हो जाए। मालती कमला के पास चली गई। उसने रूखे स्वर में बोली-"मैं आप लोगों से अलग होना चाहती हूं।" "मगर क्यों ?" कमला ने पूछा।

"क्यों-ट्यों नहीं, अलग रहना है तो रहना है। इस मकान में आधा हिस्सा मेरा है और आधा तुम्हारा। आज से इधर का हिस्सा मेरा और उधर का हिस्सा तुम्हारा...।" मालती घर की सभी चीजों में आधा मेरा और आधा तुम्हारा किए जा रही थी। कमला ने उसकी बात बीच में काट कर पूछा-"क्या देवरजी की राय ले ली हो?"

"हां!" "क्या वह अलग होने को राजी हैं?" "नहीं!" "फिर तुम क्यों अलग होना चाहती हो?" "मुझे तुम लोगों से अलग रहने में ही सुख मिलेगा।" "मुझे तुम्हारी बातें समझ में नहीं आती है। तुम ऐसा क्यों चाहती हो?"

"अभी समझ में आ जाएंगी। घर में कुछ कितने बरतन हैं?" मालती ने कड़ुवेपन से कहा।

"कभी गिना तो नहीं है।" "ठीक है, मैं ही गिनकर उन्हें आधा-आधा कर देती हूं। देखो, इतनी थालियां, कटोरे, लोटे.. मेरे और बाकी आधे तुम्हारे।"

"जरा ठहरो मालती, हिस्सा बांट तो हम नहीं कर सकते, मर्द लोग करेंगे। तुम अभी रूको, मैं तुम्हारे जेठ जी से बात करती हूं।" कहती हुई कमला अपने पति के पास चली गई।

इधर मालती भनभनाने लगी-"मर्द जाएं भाड़ में। मर्द की नजर में औरत तो पागल होती है। जब वह पागल होती है तो पागलपन का नजारा भी दिखाना जरूरी है। मैं कोई इस घर में भागकर नहीं आई हूं। मेरा भी ब्याह हुआ है। मेरा भी इस घर की संपत्ति पर आधे का हक है। मैं आज उसे बांट कर ही रहूंगी।" राम सिंह के पास जाते-जाते कमला के कानों में मालती की अपमानजनक बातें आ पड़ी-"जाकर जेठ जी से कह देना कि मैं वह भावज नहीं हूं जो जेठ जी के सामने डेढ़ हाथ का घूंघट निकाल कर मुंह पर ताला लगा लूंगी। अगर उन्होंने आज मेरा हिस्सा नहीं बांटा तो झाड़ू से बात करूंगी।"

पर कमला ने देवरानी से पलट कर कुछ भी कहना उचित नहीं समझा और चुपचाप चली गई। घर के बाहरी हिस्से में बनी कोठरी में राम सिंह पूजा कर रहे थे। पत्नी ने कोठरी का दरवाजा खोल कर अंदर प्रवेश किया-"आप यहां पूजा कर रहे हैं और उधर घर में बहू हिस्सा बांट रही है।" राम सिंह के कहने पर कमला ने सारा किस्सा बयान कर दिया। उन्होंने कहा-"बहू से कहो कि आज से वही घर की मालकिन है। सारा रुपया-पैसा, जेवर-गहना उसे सौंप दो, वह पढ़ी-लिखी होशियार है , अच्छा प्रबंध करेगी।"

कमला वहां से चली गई। घर के भीतर से जितना रुपया-पैस, जेवर-गहना था, उठा लाई और मालती के सामने रख दी। मालती ने पूछा-"जेठ जी ने क्या कहा है ?" "उन्होंने कहा है कि बहू पढ़ी-लिखी है, आज से घर की वही मालकिन होगी। यह लो घर की चाभियां, रुपये-पैसे, जेवर, अनाज। सब कुछ तुम्हारे सामने है। अब मुझसे जो कहो, वह मैं करूं।" "इन सभी चीजों में आधा हिस्सा तुम ले लो।" पर कमला ने इंकार कर दिया। मालती ने खीज कर कहा-"तुम अपना उठाती क्यों नहीं?"

"स्वामी की आज्ञा नहीं है।" "तो क्या स्वामी की आज्ञा से तुम अपना हिस्सा छोड़ दोगी?" "हां, अवश्य छोड़ दूंगी।" कमला ने दृढ़ता से कहा।

मालती पुनः भनभनाती हुई अपने भाग्य को कोसने लगी, कैसे पागलों से पाला पड़ा है। यहां हर कोई अपना विचार मुझ पर लादना चाहता है। मेरी किसी बात को कोई सुनना ही नहीं चाहता। अब अलग होने में क्या बुराई है जो जेठजी मुझे ही घर की मालकिन बनाने पर तुले हैं। लेकिन मैं भी मानने वाली नहीं हूं या तो अलग रहूंगी या फिर सब पागलों को मजा चखा कर रहूंगी।

मालती ने घर के सारी वस्तुओं को आधा-आधा कर डाला। घर के भीतर जितने सामान थे, सब बंट गए। पर बांटने का काम उसे अकले ही करना पड़ रहा था। कमला उसे देखने भी नहीं आई। उसका मन भी अब बंटवारे से ऊब चुका था। पर वह अपनी बात से हटना नहीं चाहती थी। शाम होने से पहले उसने अपना चूल्हा अलग बना लिया। थकी होने के बाद भी उसने बड़े प्रेम से बड़े अच्छे-अच्छे व्यंजन तैयार किए। रात को खाना खाने के लिए श्याम सिंह जब घर में घुसा तो उसे दो चुल्हे दिखाई दिए।

सुबह में पत्नी से हुई बातचीत के आधार पर उन्हें माजरा समझते देर नहीं लगी। वह अनजान बनते हुए भाभी के चौके में घुस गया और बोला- "क्या बना है भाभी?"

"खिचड़ी पकाई है।"

"जल्दी निकालो, बड़ी भूख लगी है।"

"नहीं, तुम बहू के चौके में जाकर खाना खाओ। नहीं तो उसे बुरा लगेगा।"

"यदि उसे इतना बुरा लगता तो अलग खाना ही क्यों बनाती? हां, यदि तुम खाना नहीं दोगी तो भूखा ही सो जाऊंगा।"

देवर का भूखा सो जाना भाभी को गवारा नहीं था सो उसने खिचड़ी निकाल कर दे दी। श्याम सिंह खाना खाकर बाहर ही सोने चला गया। मालती पैर पटकती रह गई। गुस्से में वह खा भी नहीं पाई। सारी पूरियां कुत्ते को डाल देनी पड़ी। बेचारी के लिए उस दिन एकादशी हो गई।

सुबह श्याम सिंह से उसने पूछा- "तुम मेरे चौके में क्यों नहीं खाए?"

"मैं भैया-भाभी से अलग नहीं रहना चाहता। तुम अलग रहना चाहती हो, तो रह सकती हो।"

मालती क्या बोले लेकिन उसकी समझ में यह बात आ गई थी कि अलग रहकर बहुत सुखी नहीं हुआ जा सकता है। उसने अपने पति से कहा-"मेरी समझ में यह बात आ गई है कि मैं जिसके साथ अलग रहूंगी वही जब मुझसे अलग हो जाएगा तो फिर मैं क्यों अलग रहूंगी। मैं अपना हठ छोड़ देती हूं। अभी जाकर अपना चूल्हा तोड़ देती हूं। सबसे अलग रह कर मैं भला कौन-सा सुख पा लूंगी।"

"चलो तुम्हारा पागलपन तो दूर हो गया।" श्याम सिंह के चेहरे पर संतोष झलक उठा।

मालती ने तब से आजीवन हिस्सा बांट का नाम नहीं लिया। कमला भी घर के कार्यो में मालती की राय लिया करती थी। अब घर की सारी चाभियां मालती के पास रहने लगी।

— भारत भूषण पाण्डेय

वन्देमातरम्

पलाश आम्र मंजरी कचनार का श्रृंगार वंदे मातरम
हरित धानी चुनर कलाकार वंदे मातरम
पपीहा केपी हक्का पुकार वंदे मातरम
कोयल की कूक का जयकार वंदे मातरम

उतुंग हिमशिखर का किरीट वंदे मातरम
दिव्य ग्रंथ वंदे मातरम, पुनीत वंदे मातरम
हरी ॐ पृथ्वी शांति का उद्घोष वंदे मातरम
कठोर तपन अमर साधना का परितोष वंदे मातरम

गंगा यमुना रावी झेलम की कलकल धार वंदे मातरम
हर भारतवासियों की पुकार वंदे मातरम
सुभाष भगत सुखदेव शेखर का फरमान वंदे मातरम
भारत की चंदन माटी की पहचान वंदे मातरम

तंत्र वंदे मातरम मंत्र वंदे मातरम
राष्ट्रीय अखंड एकता का सूत्र वंदे मातरम
स्वाभिमान वंदे मातरम अभिमान वंदे मातरम
विश्व में हिंदू की पहचान वंदे मातरम

— विजय कुमार

भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हिन्दी भाषा कुछ न कुछ सर्वत्र समझी जाती है।

- पं. कृ. रंगनाथ पिल्लयार

अन्नदाता है किसान

भूमि का सीना चिर के
बीज बोता भू-कोख में
दिनरात करता देखभाल
सब सुधबुध अपनी भूल-भाल।

बस यही है एक आस
अबकी मिटेगी भूख प्यास
अन्नदाता है किसान
टुकटुक देखे है, आकाश।

बस बची है, एक आस
अब के बरसेगा, देवराज
पर क्या बुझेगी,
धरा की अतृप्त प्यास
अन्नदाता है किसान।

अबकी फसल से मात देगा
कर्जदारों की बिसात
सोचता बस यही हर घड़ी,
और, मन ही में मगन रहता है वो।

घर मे अब आएंगी खुशियां,
या, फिर छला जाएगा वो
बस इसी भ्रम में जी रहा है,
दूसरों की थालियों में व्यंजनों को परोस के।

खुद नमक रोटी को तरसता रहता है वो।
ईश्वर को कभी कोसता
फिर भी ईश्वर के भरोसे
सब कर्म अपने छोड़ता।

— **चंदन कुमार**

अब तुम्हें हारना ही होगा

पैदा करने की चाहत ना होती तुमको ;
आ भी गयी तो ना राहत तुमको;
तुम्हारी किस्मत में सिर्फ शोषण लिखा है:
ना मिलने वाला पोषण लिखा है

हर समय तुम्हे करना पड़ता संघर्ष ;
किसी चीज में ना होता तुमसे कोई विमर्श;
तुम्हारे हर्ष से ना लोगों में होती ख़ुशी थोड़ी सी;
तुम्हें नीचा दिखाने को होती लोगों की घृणित बोली सी

महिलाएं होतीं मान और मर्यादा;
है देवी वो पुजा जिसकी होती:
ये सब बस कहने की बातें;
जिसको देखो वो इज्जत उनकी तार तार करने में रहते

पग पग पर खतरा मंडराता रहता तुम पर;
डग डग पर शोषण भी होता है तुम पर;
क्या अपने और क्या पराये,
सबकी नजर रहती सिर्फ चमड़ी पर

अब ना मुरारी आयेंगे, ना त्रिपुरारी आयेंगे;
ना रहीम आयेंगे, ना इलाही ही आयेंगे;
ना संत आयेंगे, ना पीर अब आयेंगे;
तुम्हें बचाने ना कोई वीर अब आयेंगे;

तुम्हारी किस्मत में है सिर्फ जलना,
तुम्हे बचाने अब कोई ना आयेंगे
सिर्फ ये तुम्हारा भ्रम की
इंसानियत भी कोई चीज है;
समाज के इन आततायिओं के बीच:
अबलाओं की कुर्बानियां ही लिखी है

क्या इतना सब हो कर भी तुम जीने की चाह रखती हो;
इतने विषपान के बाद भी पीने की चाह रखती हो;
क्यूँ आयी तुम इस जुल्म भरी दुनिया में;
कौन सा सपना अभी तक मन में सजा कर रखी हो

किस जिद से तुम अब भी जिन्दा हो;
इतना होकर भी क्यूँ अभी तक ना तुम शर्मिंदा हो ;
क्या और जुल्म और जिल्लत बर्दाश्त कर सकती हो:
क्यूँ अभी भी जीतने की चाह रखती हो

क्या बदल पायेगा समाज जिसकी तुम कोशिश कर रही;
क्या मिल पायेगा इंसान का दर्जा जिसकी तुम मांग कर रही;
कदम कदम पर गीध हैं नजर गड़ाए हुए;
क्या मिल पायेगा तुम्हे बराबरी का हक़;
जहाँ लोग हैं तुम्हारे सम्मान को ही
ठोकर पहुँचाने को डटे हुए

अपने दर्द की दवा तुम खुद ना बन पाओगी;
हो रहे जुल्म का मुकाबला खुद ना कर पाओगी ;
आज छद्म भेष में अपने भी बनते फिरते बेगाने;
सत्ता में चूर इन जालिमों का दंभ ना मिटा पाओगी;
हम तुम्हें तो बस हारना ही होगा, घुट घुट कर जीना
स्वीकारना ही होगा।

— प्रकाश रंजन

मालदा मंडल के मुंगेर स्थित विश्व के पहले योग विश्वविद्यालय व राजमहल स्थित कन्हैया स्थान के संबंध में कुछ तथ्य

बिहार योग विद्यालय योग से सम्बन्धित शिक्षण-प्रशिक्षण का अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विश्वविद्यालय है। यह बिहार के मुंगेर नगर में गंगा नदी के किनारे स्थित है। यह विद्यालय गंगा दर्शन के लिए प्रसिद्ध है। इसकी स्थापना सन् 1964 में स्वामी सत्यानन्द सरस्वती ने अपने गुरु स्वामी शिवानन्द की इच्छानुसार विश्व को योग की प्राचीन विद्या की शिक्षा देने के लिए की थी। बिहार योग विद्यालय योग प्रशिक्षण प्रदान करने वाली एक दातव्य एवं शैक्षणिक संस्था है। आज यह विश्व का प्रथम योग विश्वविद्यालय है जहां पूरे विश्व से लोग योग और अध्यात्म की खोज में आते हैं। ऐसा माना जाता है कि यहां के कई योगियों ने आत्म ज्ञान को प्राप्त किया और अपना शेष जीवन मानवता के उद्धार के लिए समर्पित कर दिया साथ ही इस संस्थान में कार्य करते हुए अनंत लोक को प्रस्थान किए।

राजमहल से 13 कि0 मी0 पर अवस्थित कन्हैया स्थान भगवान कृष्ण के मंदिर के लिए विख्यात है। यह माना जाता है कि बंगाल से लौटते समय श्री चैतन्य महाप्रभु यहाँ रूके थे तथा यहीं उन्हें भगवान के दर्शन भी हुए थे। श्री चैतन्य भक्ति योग के परम प्रचारक एवं भक्तिकाल के प्रमुख कवियों में से एक थे चैतन्य महाप्रभु के तथा भगवान कृष्ण के पद चिह्न कन्हैया स्थान में मौजूद है। वर्तमान समय में कन्हैया स्थान में भगवान श्रीकृष्ण का मंदिर भी निर्मित हो गया है। गंगा नदी के किनारे स्थित इस मंदिर में हर साल देश-विदेश के हजारों श्रद्धालु भगवान श्रीकृष्ण के चरण चिह्नों के दर्शन को आते हैं तथा श्रद्धा भक्ति पूर्वक वहां अपना माथा टेकते हैं। आज की तारीख में यह मंदिर भगवान श्रीकृष्ण के भक्तों के लिए एक धाम की तरह माना जाता है और यह कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण यहां स्वयं उपस्थित हैं।

छायाचित्र

साहिबगंज स्थित रेलवे स्कूल के बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागियों हेतु आयोजित पुरस्कार वितरण के दृष्य